दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL3**

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** *7102

Center & Date: Delhi . 16/07/19 **UPSC Roll No.** ***(If allotted)*****:** 1134510

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से ***कम-से-कम एक प्रश्न*** *चुनकर किन्हीं* ***तीन प्रश्नों*** *के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिये जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर ***कोई अंक नहीं*** *मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS*** *and printed both in* ***HINDI & ENGLISH***.
Candidate has to attempt ***FIVE*** *questions in all.*
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।

तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।

सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।

साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।

दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।

रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।

पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।

बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झाँखि।

मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पाँखि।।

संदर्भ -

'अवधी के अरधान' जायसी ने ठेठ अवधी भाषा के माधुर्य के साथ बारहमासा रीति का प्रयोग करते हुये वियोग शृंगार एवं विरह का सूक्ष्म वर्णन पद्मावत के नागमती वियोगखंड में किया है। प्रस्तुत पद्यांश में विरह की इसी स्थिति का चित्रण है।

व्याख्या - जायसी ने नागमती का विरह वर्णन करते हुये लिखा है कि रोते हुये बारह मास बीत गये। हर साँस में एक दुख दिखाई देता है। एक वर्ष युग की भाँति प्रतीत होता है। संध्या के समय नागमती राह देखती है कि उसका प्रियतम लौट आये।

प्रियतम के वियोग में वह जलकर कोयले

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाँति हो गई है। शरीर में माँस का एक भी अंश नहीं बचा। रक्त आँसू बनकर बह गया है। नागमती कहती है कि हे प्रियतम इस विरह से मुझे मुक्ति प्रदान करे।

शिल्प पक्ष

भाषा - ठेठ अवधी

अलंकार - उपमा, उत्प्रेक्षा

रस - वियोग श्रृंगार

छंद - कडवक बद्ध शैली में चौपाई व दोहा

विशेष -

→ जायसी ने बारहमासा रूढ़ि का प्रयोग कर साहित्यिक स्तर पर सांस्कृतिक समन्वय को पुष्ट किया है।

→ जायसी की नागमती की भाँति ही सूर की राधा भी इसी तरह विरहदग्ध है -

"अति मलिन वृषभानु कुमारी
हरि स्रमजल अंतर तन भीजै
ता लालच न धुवावति सारी।"

→ 'दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला मासु रहि न देहा' में विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन शुक्ल जी के अनुसार फारसी प्रेम पद्धति का उदाहरण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास शृंगार के कवि है। उनके काव्य में शृंगार के तीनों पक्षो - सख्य, वात्सल्य एवं दाम्पत्य का सूक्ष्म वर्णन दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत पद, जो आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीत सार' से लिया गया है, में इसी दाम्पत्य सुख का विरह शृंगार के रूप में वर्णन है।

व्याख्या - विरह दग्ध राधा अपनी सखी से कहती है कि इस वीणा को दूर करे। इससे चन्द्रमा के मृग मोहित होकर रुक गये है, जिससे रात्रि समाप्त नहीं हो रही।

जब से उसके ये नयन, अपने प्रियतम से बिछुड़े है, तब से इनमें जल ही समाप्त हो गया है अर्थात् जिस प्रकार पानी की कमी में कमल सूख जाता है, उसी तरह कृष्ण वियोग में इनकी भी यही दशा है।

यह शीतल चांद विरह में अग्नि की भाँति प्रतीत होता है, इसलिए कैसे धैर्य धारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया जाये। हे प्रभु तुम्हारे दर्शन के बिना सारे यत्न बेकार है।

काव्य सौंदर्य

भाषा - ब्रजभाषा

अलंकार - उपमा, उत्प्रेक्षा

रस - वियोग शृंगार

छंद - पद

विशेष -

→ सूरदास ने विरह वियोग का सूक्ष्म वर्णन प्रस्तुत किया है, जो उनके काव्य में अन्यत्र भी दिखाई देता है -

" निसि दिन बरसत नैन हमारे "
जब ते स्याम सिधारे।"

→ सूरदास की भाँति जायसी ने भी नागमती के विरह की इसी साधारणीकरण को प्रस्तुत किया है।

" यह तन जारौं छार कै,
कहौं कि पवन उड़ाव।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

बिहारी सतसई में बिहारी ने रीतिकालीन मानसिकता से युक्त होकर श्रृंगारात्मक प्रेम एवं दैहिक श्रृंगार का वर्णन किया है किन्तु कहीं-कहीं उन्होंने ईश्वर के प्रति दास्य भक्ति को भी प्रकट किया है। उपर्युक्त पद्यांश, जो जगन्नाथ रत्नाकर द्वारा संकलित 'बिहारी रत्नाकर' से लिया गया है, ईश्वर के प्रति उसी दास्य भाव का वर्णन है।

व्याख्या - बिहारी कहते हैं कि हे प्रभु आपने तो अच्छी तरह से मेरी विनती को उपेक्षित किया है। मेरी हर पुकार फीकी पड़ गई है। आप तो केवल एक बार ही हाथी को तार कर तारणहार कहलाने लगे, अब आपको अन्य भक्तों की कोई परवाह नहीं रही।

शिल्प सौंदर्य

भाषा - ब्रज भाषा

अलंकार - अनुप्रास, उपमा

रस - भक्ति भाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

बिहारी की कम शब्दों में अधिक अर्थ समेटने वाली भाषा के संदर्भ में जार्ज ग्रियर्सन ने उन्हें श्रेष्ठ कवि कहा है।

→ उनका भक्ति भाव अन्यत्र भी दिखाई देता है -

" मेरी भव बाधा हरौ,
राधा नागरि सोई।"

→ ईश्वर के प्रति इसी मिलन का भाव एवं दास्य भक्ति सूरदास के आरंभिक काव्य एवं तुलसी के काव्य की विशेषता है।

- मेरी कौन गति ब्रजनाथ (सूरदास)
- मोसो कौन बडो है, मोसो कौन छोरो (तुलसी)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संश्लिष्ट अर्थबोधन एवं उत्कृष्ट प्रयोगों के कवि निराला किसी परम्परा में बंधने की बजाय समय के अनुसार प्रसंग का चयन एवं विस्तार करते है। उपर्युक्त पंक्तियाँ, जो उनकी एक लंबी कविता 'राम की शक्तिपूजा' से ली गई है उनमें राम की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या - युद्ध के पश्चात् रात्रि को बैठक के दृश्य का वर्णन करते हुये कहते हैं कि रात्रि के समय अंधकार उगल रहा है। इतने अंधकार में दिशा का ज्ञान नहीं हो पा रहा है।

पीछे की ओर विशाल सागर की लहरे गरज रही है और पर्वत किसी ध्यान मग्न मुद्रा में है। वहाँ केवल एक मशाल जल रही है।

किन्तु अप्रस्तुत अर्थ के रूप में यह राम की मानसिक स्थिति को दर्शाता है, जो अभी किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में है और केवल एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीता की मुक्ति रूपी एक आशा की किरण उपस्थित है।

सौंदर्य -
भाषा - तत्सम खड़ी बोली
अलंकार - मानवीकरण
रस - शांत

विशेष

→ उक्त पंक्तियों में प्रकृति का मानवीकरण दर्शाया गया है, जो छायावाद की प्रमुख विशेषता है। छायावादी कवि ने अन्यत्र भी कहा है -

" मेघमय आसमान से
उतर रही संध्या सुंदर परी सी
धीरे, धीरे, धीरे।"

→ राम की मानसिक दशा में उपस्थित नैराश्य भाव अन्यत्र भी दिखाई देता है -

" रवि हुआ अस्त।"
" स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा संशय।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

संदर्भ - नवजागरण चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती में आत्मगौरव एवं आत्म-आलोचना का भाव प्रकट किया है। उक्त पद्यांश में रीतिकालीन कवियों द्वारा कविता का उपयोग केवल शृंगार के लिए किये जाने की आलोचना की गई है।

व्याख्या - ये कवि आत्मआलोचना से पूर्व आत्मगौरव के भाव से युक्त होकर कहते हैं कि कविता का जन्म वाल्मीकि द्वारा रामकथा का वर्णन करते हुये हुआ था अतः वह आरंभ से ही राम की अनुगामिनी है अर्थात् औदात्य एवं मर्यादा से युक्त है शिक्षिका के समान है।

किन्तु अब तुम्हारे हाथों में पड़कर यह केवल शृंगार का साधन बन गई है। इसकी कांति गायब होकर अब केवल अंधेरे की भाँति रसविहीन हो गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य -

भाषा - तत्समी खड़ी बोली

शब्द शक्ति - अभिधा

अलंकार - अनुप्रास

विशेष -

→ रीतिकालीन मानसिकता से युक्त कवियों की आलोचना मैथिलीशरण गुप्त ने अन्यत्र भी की है -

" करते रहोगे पिष्ट पेषण,
और कब तक कविवरो।
कच, कुच, कटाक्षो पर अहो,
अब जीते जी न मेरो।"

→ वे कविता को मनोरंजन का साधन नहीं मानते बल्कि उसमें उपदेश की शक्ति भी निहित होती है -

" केवल मनोरंजन न कवि का,
कर्म होना चाहिए।
उसमे उचित उपदेश का भी,
मर्म होना चाहिए।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास ने भ्रमरगीत सार में गोपियों के विरह का सूक्ष्मता से अंकन किया है। उन्होंने काव्य शास्त्र के समस्त प्रकारों को अपने विरह वर्णन का हिस्सा बनाया है।

गोपियाँ श्रीकृष्ण से बिछड़कर विरहदग्ध है और <u>प्रलाप</u> की स्थिति में पहुँच गई है। वे प्रलाप करते हुये कहती है -

" निसि दिन बरसत नैन हमारे,
सदा रहति पावस ऋतु हमपे,
जब तें स्याम सिधारे।"

इस विरह की स्थिति में वह श्रीकृष्ण से मिलने की <u>अभिलाषा</u> में उनके मित्र से मिलकर भी अति प्रश्न होती है और श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गये ज्ञान को ही वास्तविक मानकर उसी से अपने विरह को दूर करती है।

गोपियाँ विरह में <u>असूया भाव</u> से भी युक्त हो जाती है और कुब्जा को भला बुरा कहने से भी नहीं चूकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" ऊधो जाके माथे भाग,
कुब्जा को पटरानी कीन्हे,
हमहिं देत बैराग।"

विरह की चरम दशा राधा की जड़ता की स्थिति में दिखाई देती है, जब वह सब कुछ त्यागकर केवल इसलिए बैठ जाती है क्योंकि उसके वस्त्रों पर कृष्ण की याद में बहे पसीनों की याद है।

उक्त प्रकार के अतिशयोक्ति पूर्ण विरह के संदर्भ में एक आलोचक ने इस विरह को 'बैठे-ठाले' का धंधा' कहा है क्योंकि विरह में दग्ध होने पर भी जायसी की नागमती अथवा तुलसी की सीता अपने लोकधर्म को नहीं भूलती।

जायसी की नागमती गोपियों से अधिक विरह में है किन्तु उस विरह में भी वह अपने विरह को सामाजिकता से जोड़ती हुई कहती है -

" पुष्य नखत सिर ऊपर आवा
मोहि बिनु नाह, मंदिल को छावा।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु आलोचक की बात से एक सीमा तक संतुष्ट होना ठीक है कि सूर की गोपियाँ ~~लोकसंमत की साधना~~ अपने विरह को लोक धर्म से निरपेक्ष रूप में देखती है। किन्तु सम्पूर्ण सूरसागर इसी दृष्टि से युक्त नहीं है।

सूर की गोपियाँ अपने विरह की दशा में भी उद्धव से तर्क करते हुये तत्कालीन समाज के द्वंद्वों ' सगुण - निर्गुण व योग - भक्ति में सगुण तथा भक्ति की महत्ता स्पष्ट करती है। वे निगुर्ण एवं योग को नकारती है -

" निगुर्ण कौन देस को बासी।"

" आयो घोष बड़ो व्यापारी,
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की,
ब्रज में आन उतारी।"

इसके अतिरिक्त सूर की गोपियाँ विरह की दशा में उद्धव को नीरसता की बजाय सरसता का संदेश देती है। वे प्रकृति के माध्यम से उद्धव को संदेश देते हुये कहती है कि -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ऊधौ कोकिल कूजत कानन,
तुम हमको उपदेस करत हो,
भस्म लगावत आनन।"

अर्थात् वे नीरसता की बजाय प्रकृति की सुन्दरता को निहारने को कहती हैं।

सारांशतः स्पष्ट है कि सूर की गोपियों का विरह एक स्तर तक बैठे-ठाले का धंधा है किन्तु अधिकांश रूप में वह मध्यकालीन नारी दासता के बंधनों को तोड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की साधना पद्धति संश्लिष्ट है। जो योग मार्ग से आरंभ होकर, कहीं-कहीं ज्ञान मार्ग से युक्त होती हुई, भक्ति मार्ग पर पूर्णता को प्राप्त करती है। इन विभिन्न पद्धतियों का उनकी भाषा पर भी प्रभाव पड़ता है।

आचार्य द्विवेदी जी ने कबीर की भाषा की प्रशंसा करते हुये उन्हें भाषा का बादशाह एवं वाणी का डिक्टेटर कहा है। वे कबीर की भाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्पष्ट करते हुये ~~करते है~~ है।

आचार्य शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबंध में भाषा की काव्यात्मकता की कसौटी निर्धारित करते हुये कहा है कि भाषा में बिम्ब ग्रहण की क्षमता होनी चाहिए। कबीर के काव्य में यह उपस्थित है -

" जल में कुंभ है, कुंभ में जल,
बाहर भीतर पानी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर की भाषा की एक मुख्य विशेषता है, इसका उचित स्थान पर उचित शब्दों का प्रयोग। कबीर जब पंडे को लताड़ते है, तब भाषा में तत्समी पन अधिक है, वहीं मुल्लों पर कटाक्ष करते हुये उनकी भाषा में फारसी एवं अरबी शब्दों की बहुलता है।

कबीर की भाषा की एक अन्य विशेषता मनोस्थिति के अनुसार इसका प्रेम एवं अक्खड़ता का समन्वय हो। कबीर कहीं-कहीं प्रेम के अतिरेक से युक्त होकर कहते है " मन मस्त हुआ' वहीं दूसरी ओर अक्खड़ता के साथ कहते है- कबीर यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं।

कबीर की भाषा की प्रमुख विशेषता है, उसकी व्यंग्य क्षमता। हिन्दी के इतिहास में इतने स्पष्ट ~~व्यं~~ एवं तीखे व्यंग्य कहीं और विद्यमान नहीं है -

" पाहन पूजे हरि मिलै,
तो मैं पूजूँ पहार
ताते तो चाकी भली,
पिस खाये संसार।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोकभाषा के प्रति आग्रह भले ही कबीर के काव्य को काव्यात्मकता से थोड़ा दूर करे किन्तु तत्कालीन निरक्षर जनता के लिए संस्कृत में कविता करना उचित नहीं था। महाकवि तुलसीदास ने भी रामचरितमानस की रचना अवधी में करते हुये कहा था -

" का भाषा, का संस्कृत,
प्रेम चाहिए साँच।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि कबीर की भाषा काव्यात्मकता के प्रतिमानों पर सटीक बैठती है। इसलिए वे भाषा के बादशाह एवं बोली के डिक्टेटर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

जायसी एवं कबीर दोनो मध्यकालीन सामाजिक संस्कृति के आधार स्तंभ है। इन्होंने तत्कालीन सांस्कृतिक समन्वय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

रहस्यवाद एक प्रकार की तीव्र भावनात्मक अभिव्यक्ति है, जो प्रियतम से मिलन की स्थिति को दर्शाता है। चूंकि कबीर एवं जायसी दोनो अपने-अपने ईश्वर से मिलन की तड़प रखते है, अतः दोनो के काव्य में रहस्यवाद दिखाई देता है।

कबीर पर योग परम्परा का प्रभाव होने के कारण उनके काव्य में साधनात्मक एवं अन्तर्मुखी रहस्यवाद की उपस्थिति अधिक है-

" नैनो की करि कोठरी,
पुतरी पलंग बिछाय
पलको की चिक डारि कै,
पिया को लिया रिझाय।"

वही जायसी का रहस्यवाद भावनात्मक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एवं बहिर्मुखी है। वह प्रकृति को ईश्वर की रचना मानते है तथा प्रत्येक तत्व में ईश्वर का दर्शन करते हैं -

" जेहि दिन दसन जोती निरमई
बहुतैं जोती जोती ओही भई,
रवि ससि नखत दीपति है जोती
रतन पदारथ मानक मोती।"

किन्तु कबीर द्वारा योग की नीरसता को त्यागकर जब भक्ति को अपनाया, तब सांस्कृतिक समन्वय के फलस्वरूप में उन्होंने अपने काव्य में भावनात्मक रहस्यवाद को भी स्थान दिया।

" लाली मेरी लाल की,
जित देखू तित लाल
लाली देखन मैं चली
मैं भी हो गई लाल।"

वही जायसी के रहस्यवाद को भी केवल एक ही पक्ष के रूप में देखना उनकी सांस्कृतिक समन्वय की चेष्टा की उपेक्षा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करने के समान है क्योंकि उन्होंने भी साधनात्मक रहस्यवाद को अपनाया था।

" गढ़ तस बाँक जैसी तोरी काया।
पुरुष देख ओही कै छाया।"

सारांशत: स्पष्ट है कि कबीर के काव्य का अधिकांश साधनात्मक रहस्यवाद एवं जायसी के काव्य का भावनात्मक रहस्यवाद है किन्तु दोनो का संश्लिष्ट रूप ही उन्हे पूर्णता प्रदान करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~पद्मावत~~ क

अन्योक्ति एवं समासोक्ति दो अलंकार है। यदि किसी काव्य में प्रस्तुत अर्थ की अपेक्षा अप्रस्तुत अर्थ प्रधान हो, तो उसे अन्योक्ति कहा जाता है।

वहीं किसी काव्य में यदि प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत अर्थ दोनो समान महत्व रखे तो उसे समासोक्ति कहा जाता है। पद्मावत के संदर्भ में यह एक विवाद है कि यह अन्योक्ति है या समासोक्ति।

वस्तुतः पद्मावत को अन्योक्ति मानने वाले समीक्षकों का तर्क उस चौपाई पर आधारित है, जिसमें लिखा गया है -

" तन चित्तउर, मन राजा कीन्हा,
दिप सिंहल, बुद्धि पद्मिनी चीन्हा
गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा,
बिनु गुरु जगत को निर्गुण पावा।।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस आधार पर अनेक समीक्षक मानते है कि जायसी ने उक्त प्रतीकों का प्रयोग करते हुये पदमावत की रचना की। अत: यह एक अन्योक्ति है।

किन्तु आधुनिक विश्लेषण से यह स्पस्ट है कि यह दोहा जायसी द्वारा नहीं बल्कि परवर्तीकाल में किसी अन्य कवि द्वारा लिखा गया है। अत: पदमावत अन्योक्ति के पैमाने पर खरा नहीं उतरता।

वही इसे समासोक्ति मानने वाले समीक्षको का कहना है कि पदमावत में प्रस्तुत अर्थ के साथ अप्रस्तुत अर्थ भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। उनके अनुसार प्रस्तुत कथा इहलौकिक जीवन को दर्शाती है।

वही अप्रस्तुत कथा सूफी परम्परा के तसव्वफ से प्रभावित है। अत: अप्रस्तुत अर्थ का भी महत्व है। इस आधार पर इसे समासोक्ति माना जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

किन्तु विजयदेव नारायण साही ने स्पष्ट करते हुये कहा है कि पद्मावत के सम्पूर्ण भाग में अपस्तुत कथा लागू नहीं होती यह केवल एक मुहावरे की भाँति है।

अतः पद्मावत न तो अन्योक्ति है और न ही समासोक्ति। यह एक प्रकृत काव्य है, जो जीवन की सम्पूर्णता को प्रकट करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

आधुनिक कविताओं में बिम्ब क्षमता पर अधिक बल दिया जाता है। इसलिए इन्हे बिम्बों का नगर भी कहा जाता है। मुक्तिबोध की ब्रह्मराक्षस भी बिम्ब विधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

स्वयं मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में बिम्बो के संदर्भ में कहा है कि -

" मेरी ये कविताएँ,
भयानक हिडिम्बा है,
वास्तव की विस्फारित प्रतिमाएँ,
विकृताकृति बिंबा है।"

आचार्य शुक्ल ने कविता क्या है निबंध में बिम्ब प्रयोग को कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता बताई थी। मुक्तिबोध की कविता में बिम्बों की सघनता उनकी काव्य की दृष्टि से विशिष्टता प्रदान करती है।

मुक्तिबोध के काव्य में विभिन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रकार के बिम्ब उपस्थित है। उन्होंने साधारण, संश्लिष्ट, गतिशील एवं श्रव्य सभी प्रकार के बिम्बों का प्रयोग किया है।

" शहर के उस तरफ,
बावड़ी की ओर।
परित्यक्त सूनी बावड़ी।" (स्थिर बिंब)

उन्होंने आंतरिक मनोभावों को भी बिम्ब के रूप में प्रकट किया है। आंतरिक संघर्ष को प्रकट करते हुये उन्होंने लिखा है-

" खूब ऊँचा जीना साँवला,
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
वे अभ्यान्तर निराले लोक की
एक चढ़ना और लुढ़कना।"
(गतिशील बिंब)

कविता न केवल पद्य एवं दृश्य ही हो बल्कि उसमें श्रव्य बिम्ब भी उपस्थित हो, यह मुक्तिबोध ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा से साकार किया है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" बाँह छाती मुँह छपाछप।"

" कुद्र मंत्रोच्चार।"

उक्त उदाहरण कविता को श्रव्यता से जोड़ते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मुक्तिबोध ने कविताओं को बिम्ब शृंखला के रूप में प्रकट करते हुये नवीनता प्रदान की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वक्रता एवं वाग्विदग्धता से तात्पर्य है किसी बात को सीधे न कहकर व्यंग्य के रूप में कहना। आचार्य शुक्ल ने इसे उक्ति वैचित्र्य कहा है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार कविता में भाव प्रेरित वक्रता इसके आस्वादन एवं प्रभाव को बढ़ा देती है, वही बुद्धि प्रेरित वक्रता इसे दुरूह बना देती है।

आचार्य शुक्ल ने सूर की गोपियों की प्रशंसा करते हुये कहा है कि-

" एक ही बात को कहने के न जाने कितने तरीके उन्हे आते थे। उनकी भावनात्मकता ने इसे सरस बना दिया।"

सूर की गोपियों की वक्रता एवं वाग्विदग्धता भ्रमरगीत सार में तीन स्तर पर दिखाई पड़ती है।

प्रथम स्तर पर वे उद्धव के समक्ष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने प्रेम की प्रशंसा करती है और कहती है कि श्रीकृष्ण के प्रति उनका प्रेम अटल है-

"उर में माखन चोर गड़े,
अबहूँ कैसे निकासति नाहि
तिरछे है ज्यूँ अड़े।"

जब उद्धव उनके तर्कों का खंडन करते है, तब गोपियाँ भी आक्रामक होकर उद्धव के सिद्धांतों का खंडन करती है।

"निरगुण कौन देस को बासि।
कौ है जनक जननी को कहियत
कौन नारि को दासि।"

उद्धव के सिद्धांतों का खंडन करने के पश्चात. भी जब उद्धव श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के ~~प्रेम~~ प्रेम को समझने में विफल रहते है, तब वे सीधे रूप मे उद्धव की बुराई करने लगती है। यह उनकी वक्रता एवं वाग्विदग्धता का अंतिम स्तर पर है, जहाँ वह उद्धव को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ब्रज में आने से ही मना कर दी है।

" आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की
ब्रज में आन उतारी ।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यंग्य क्षमता की अबूझता में भले ही कबीर श्रेष्ठ हो किन्तु व्यंग्य को इस रूप में प्रकट करना कि सामने वाले को बुरा न लगे, यह क्षमता केवल सूरदास के पास है।

कृपया इस स्थान म
कुछ न लिखें।

(Please don't writ
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

ईश्वर मिलन की तड़प, गुरु की महिमा एवं विरह का भाव कबीर के काव्य का मूल है। उक्त साखी, जो श्यामसुन्दर दास द्वारा संकलित कबीर ग्रंथावली से ली गई है, जिसमें ईश्वर मिलन की तड़प स्पष्टत: दिखाई दे रही है।

व्याख्या - कबीरदास कहते है कि मैंने ईश्वर को आँखों में बसा लिया है, जिससे दिन-रात तुम्ही को देखता हूँ। अर्थात् तुम्ही को स्मरण करता हूँ।

हे प्रभु वह दिन कब आयेगा, जब तुम मुझे दर्शन देकर कृतार्थ करोगे।

सौंदर्य -

भाषा - साधुक्कड़ी

छंद - साखी (दोहा)

अलंकार - अनुप्रास

रस - विरह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष -

ईश्वर मिलन की तड़प कबीर के काव्य में अन्यत्र भी दिखाई देती है -

" विरहणी ऊभी पंथ सिरि,
पंथी बूझै दाहि।
एक सबद कहि पीव का
कबहू मिलैंगे आहि। "

→ ईश्वर मिलन की तड़प के पश्चात् जब कबीर भक्ति भाव से युक्त होकर ईश्वर का अनुभव करते है तो भावनात्मक रहस्यवाद के प्रभाव में वे लिखते है -

" मन मस्त हुआ, अब क्या बोलें "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

'अवधी के अरस्थान' जायसी ने ठेठ अवधी की मिठास के साथ बारहमासा रूढ़ि का प्रयोग पद्मावत के 'नागमती वियोग खंड' मे नागमती के विरह के सूक्ष्म वर्णन में किया है.

व्याख्या - नागमती विरह से युक्त होकर कहती है कि भाद्रपद के महीने में जीवन यापन अत्यधिक कठिन हो गया है। मेरा घर प्रिय के बिना सूना है, और यह सेज नाग की भांति मुझे डस रही है। विरह से युक्त नयनों से मेरा हृदय फटा जा रहा है।

बाहर बिजली चमक रही है, और बिरह रूपी काल मेरे जीवन लेने का प्रयास कर रहा है। मेघ धीरे-धीरे बरस रहे है साथ मे मेरे दोनो नेत्र भी बह रहे हैं। पूर्वा नक्षत्र लग गया है और पृथ्वी जलमग्न हो गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य -

भाषा - ठेठ अवधी

अलंकार - उपमा, उत्प्रेक्षा

रस - विरह श्रृंगार

छंद - कडवक बद्ध शैली में चौपाई

विशेष -

→ जायसी की भाषा की प्रशंसा करते हुये आचार्य शुक्ल ने कहा है -

" जायसी की भाषा का माधुर्य निराला है।"

→ ठेठ अवधी का सूक्ष्म वर्णन किया गया है -

" नैन चुवहि जस ओरी।"

→ विरह की यही दशा सूर की गोपियों में भी दिखाई देती है -

" निसि दिन बरसत नैन हमारे,
सदा रहति पावस रितु हमपैं,
जब ते स्याम सिधारे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

निराला संश्लिष्ट अर्थबोधन एवं उत्कृष्ट प्रयोग के कवि है, जो समय के अनुसार प्रसंग का चयन एवं विस्तार करते है। 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत उक्त पंक्तियो में पहले दिन की युद्ध की हार का वर्णन है।

व्याख्या - पहले दिन राम-रावण संघर्ष के बाद शिविर मे लौटते हुये राम सेना से आगे चल रहे है। हाथ में धनुष ढीला पडा हुआ है और कमर में तरकस है। सिर पर जटा (बालो की चोटी खुल गई है, जिससे बाल बाहु, वक्ष पर फैल गये है।

के हार की निराशा के साथ पर्वत पर अंधकार का वातावरण है और आकाश मे तारागण चमक रहे है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य -

भाषा - तत्समी खड़ी बोली

रस - वीभत्स

अलंकार - उपमा, अनुप्रास

विशेष -

→ राम की इसी नैराश्य मनोस्थिति का वर्णन कवि ने अन्यत्र भी किया है -

" है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार।"

→ कवि ने खड़ी बोली की समास क्षमता का सधा हुआ प्रयोग कर भारतेन्दु की उस बात का जवाब दिया है, जिसमें वे कहते है कि खड़ी बोली मे सामासिकता का अभाव है।

→ कुछ आलोचक राम के इस रूप की तुलना स्वयं निराला से करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

मैथिलीशरण गुप्त नवजागरण चेतना के कवि है, जिन्होंने भारत-भारती में आत्मगौरव एवं आत्म आलोचना का भाव प्रकट किया है।

व्याख्या - कवि आत्मगौरव की भावना से युक्त होकर कहते है कि जिस भारत से वेदों का गान होता है, आज उन्ही आर्यों की धरती से उल्लू उनकी विनाश की कहानी कह रहे है।

आगे कवि आत्म आलोचना से युक्त होकर कहता है कि हे हिन्दुओ तुम अपने स्वार्थ एवं अज्ञानता में सोते रहो। हम ब्रिटिश यहाँ मौज कर रहे है। जो जाति अपनी प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृति को संरक्षित नही कर पाती, उसका पतन तो अवश्य ही होना तय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य -

भाषा - तत्समी खड़ी बोली
रस - शाँत
अलंकार - अनुप्रास

विशेष -

→ आत्म गौरव का यह भाव भारतेन्दु के काव्य में भी दिखाई देता है -

" सबके पहिले जेहि धन बल दीन्हो,
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीन्हो।"

→ गुप्त जी की दृष्टि यहाँ हिन्दू केन्द्रित दिखाई देती है, जिसकी आलोचना की गई है।

→ भारत के विनाश के कारण भारतेन्दु की भाँति गुप्त जी ने भी बाहरी आक्रमण को माना है।

प्रासंगिकता - उक्त पंक्तियाँ हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय की ~~नि~~ निरीश्वरवाद से ईश्वरवाद की यात्रा में सर्जनशक्ति का आह्वान एवं सर्जन की अर्हता का संप्रेषण असाध्यवीणा में हुआ है। उक्त पंक्तियों में इसी सर्जन की अर्हता को दर्शाया है।

व्याख्या - राजा सर्जन की अर्हता केवल विद्या को मानता है, जबकि वास्तव में सर्जन की अर्हता ~~आत्मविलयन~~ आत्म निवेदन एवं अहं विलयन से प्राप्त होती है।

राजा कहता है कि यह वीणा असाध्य है किन्तु अब मुझे विश्वास है कि यह तुम्हारे द्वारा अवश्य साध ली जायेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सौंदर्य - भाषा - तद्भव प्रधान खड़ी बोली
रस - शांत
अलंकार - उत्प्रेक्षा, अनुप्रास

विशेष -

→ सर्जन की अर्हता के तत्व है - आत्म निवेदन एवं अहं विलयन। कवि ने अन्यत्र स्पष्ट किया है -

" मुझे स्मरण है.
पर मैं मुझको भूल गया हूँ।

→ जब प्रियंवद आत्म निवेदन द्वारा अपने अहं को वीणा के समक्ष विलयित कर देता है तब -

" वीणा सहसा झनझना उठी।"

→ उक्त कविता में जैन बौद्धमत का प्रभाव दिखाई देता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर का काव्य अपनी प्रकृति में संश्लिष्ट है क्योंकि यह कबीर के विभिन्न व्यक्तित्वों कवि, समाज सुधारक, भक्त एवं संत को प्रतिबिंबित करता है।

कबीर के काव्य की प्रासंगिकता अनेक स्तरों पर है किन्तु उनके काव्य का वह पक्ष जो समाज से जुड़ा है अर्थात् जिसमे उन्होंने धार्मिक आडम्बरो, जाति व्यवस्था एवं उपदेश दिये है वे आज भी प्रासंगिक है।

धार्मिक आडम्बर न केवल तत्कालीन समय बल्कि वर्तमान की भी समस्या है। इन्ही धार्मिक आडम्बरों ने मनुष्यता को छद्म आवरण में घेर रखा है। कबीर इन पर चोट करते हुये कहते है -

" मूँड मुड़ायें हरि मिले,
सब कोय लेय मुड़ाय,
बार-बार के मूँडते
भेड़ न बैकुण्ठ जाय।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर की एक प्रमुख विशेषता है कि वे सभी धर्मों के आडम्बरों का विरोध करते है। वे समान रूप से मुल्लों को भी डाटते है।

कबीर ने जाति व्यवस्था पर प्रहार करते हुये तत्कालीन समय में समानता की स्थापना पर बल दिया। वर्तमान समय में जाति व्यवस्था जिस तरह नवीन रूप धारण कर रही है, ऐसे में कबीर प्रासंगिक हो जाते है-

" जाति-पाति पूछे नहीं कोई,
हरि को भजै, सो हरि का होई।"

साम्प्रदायिकता की समस्या तत्कालीन समय से अधिक विकराल रूप वर्तमान में धारण कर चुकी है। उन्होंने सामाजिक संस्कृति एवं गँगा-जमुनी तहजीब के को आधार प्रदान किया -

" हिन्दू कहत राम हमारा, मुसलमान रहमाना
आपस में दोऊ लड़ते, मरम कोउ न जाना।"

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर के काव्य की एक विशेषता यह है कि वर्तमान में जब गुरु-शिष्य परम्परा का पतन हो रहा है तब कबीर की सद्गुरु परम्परा की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

" गुरु गोविन्द दोउ खड़े,
काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने
गोविन्द दियो बताय।"

कबीर के काव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसमें नीतिपरकता एवं उपदेशात्मकता है। वे समाज को नीति मार्ग पर चलने की राह दिखाते है। वर्तमान समाज में जहाँ मूल्यों का पतन हो रहा है ऐसे में उनके काव्य से समाज को नवीन दिशा मिल सकती है।-

→ सामाजिक समरसता -

साईं के सब जीव है।
कीरी, कुंजर दोय।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

→ सहिष्णुता

"निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।"

→ प्रत्येक वस्तु का महत्त्व

"बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि कबीर का काव्य न केवल उनके समय, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य में भी उतना ही प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't wr
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन आनुभाविक यथार्थ को पकट करने वाले कवि है। वे किसी परम्परा में बंधने की बजाय वास्तविकता को पकट करते है।

नागार्जुन जन साधारण की सहज भावनाओं को अपनी कविता का हिस्सा बनाते है। वे स्पष्ट करते है कि उनकी विचारधारा किसी न किसी रूप में शोषक है। वे मार्क्सवादी होकर भी इसकी यांत्रिकता से बचते है -

" क्या है दक्षिण क्या है वाम
जनता को रोटी से काम।"

अर्थात् जनता किसी विचारधारा को तब तक नहीं मानती, जब तक कि उसे अपने जीवन संचालन के लिए पर्याप्त भोजन न मिले।

वे अपनी कविताओं में ~~सामाजिक~~ सामान्य जीवन की सभी समस्याओं को पकट करते है। अकाल का वर्णन उनसे पूर्व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसी के काव्य में उपस्थित है कि नागार्जुन की सहजता ने इसमें मानवेतर प्रकृति का भी समावेश किया है।

अकाल का वर्णन करते हुये उन्होंने ऊँट, कौए, छिपकली, कुत्तिया आदि जानवरों पर भी उसका प्रभाव स्पष्ट किया है।

अपनी कविता में वे कहीं-कहीं उदात्त एवं विशिष्ट की उपेक्षा करते हुये भी दिखाई देते है -

"कहाँ गया वह धनपति कुबेर,
कहाँ गई वह उसकी अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम प्रवाही जल का।"

किन्तु यह उपेक्षा भी आनुभाविकता पर ही अवलंबित है क्योंकि प्रसाद एवं निराला द्वारा कविताओं में जो कल्पना की गई थी वह हिमालय पर उपस्थित नहीं थी, ऐसे में नागार्जुन ने इसकी आलोचना की है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in thi

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही ऐसा नहीं है कि वे उदात्त से नजर चुराते हैं बल्कि वे सौंदर्य की वस्तुनिष्ठ अवधारणा को स्थापित करते हुये स्वयं उदात्त का वर्णन करते है।

"मंद मंद अनिल बह रहा,
बालारुण की मृदु किरणे थी,
स्वर्णाभ इधर उधर बिखेर थे।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि नागार्जुन न तो साधारण को अभिमंडित करते है और न ही उदात्त की उपेक्षा। वे जीवन के लिए गेहूं तथा गुलाब दोनों का महत्व मानते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

'ब्रह्मराक्षस' मुक्तिबोध की फैंटसी शिल्प पर आधारित कविता है, जिसमें ब्रह्मराक्षस एक आंतरिक संघर्ष से युक्त चरित्र है।

'ब्रह्मराक्षस' का आंतरिक संघर्ष उसे तत्कालीन समय के अस्तित्ववादी विचारधारा के चरित्रों से संबद्ध करता है। अर्थात, अस्तित्ववादी विचारधारा के चरित्र भी एक प्रकार की आंतरिक संघर्ष की स्थिति से जूझते हुये खंडित चरित्र है।

किन्तु यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि अस्तित्वादी मान्यताओं में आंतरिक संघर्ष का मूल कारण जीवन की अपूर्णता में एवं निर्णयों की वेदना होती है।

जबकि 'ब्रह्मराक्षस' के आंतरिक संघर्ष का मूल कारण, मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के ऐतिहासिक दायित्व को पूरा न करना है।

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't v
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस ऐतिहासिक दायित्व बोध के कारण उसका आत्मचेतस एवं विश्व चैतस मन संघर्ष में है-

" आत्मचेतस किन्तु इस
व्यक्तित्व में थी प्रणमय ~~अनुभव~~ अनुभव.
विश्वचेतस बेबनाव।"

यह संघर्ष मुखर रूप में जब व्यक्त होता है, जब मुक्तिबोध ब्रह्मराक्षस के त्रासद अन्त को दर्शाते हैं। यही आत्मसंघर्ष मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में भी दिखाई देता है।

अंधेरे में कविता में 'मैं' और 'वह' का आत्मसंघर्ष ~~वास्तव~~ वास्तव में इसी ऐतिहासिक दायित्व को पूर्ण न कर पाने के कारण है।

किन्तु मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस के शिल्प के माध्यम से इस खंडित व्यक्तित्व के समाधान का रास्ता भी दर्शाया है, जबकि अस्तित्ववादी मान्यता का चरित्र त्रासद अन्त को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मजबूर है। मुक्तिबोध ने ~~सजल~~ 'सजल उर शिष्य' के द्वारा ज्ञान को संवेदना एवं समाज से जोड़ने पर बल दिया है। शिष्य कहता है -

" ~~ज्ञान~~ आंतरिकता का बताता महत्त्व।"

अर्थात अतिरेकवादी पूर्णता असंभव है। थोड़ा बहुत आत्मचेतस होना स्वाभाविक है।

सारांशतः स्पष्ट है कि 'ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक नहीं होकर, एक प्रगतिशील व्यक्तित्व का प्रतीक है, जो समाज को ज्ञान प्रदान करने की इच्छा रखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation